सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन करने की है जरूरत – प्रो. मनोज कुमार

'महिला अधिकार संरक्षण : भारत और जर्मनी के मॉडल' पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा, 08 मार्च, 2017; मुझे पुरुषों की बराबरी नहीं करनी है और न ही मुझे पुरुष बनना है। मैं महिला हूँ और मैं महिला ही रहना चाहती हूँ। इसका अर्थ यह नहीं है कि मुझे किसी भी मायने में पुरुषों से छोटा ही या कमतर आंका जाए। मार्क्स ने कहा था कि दुनिया के मजदूरों एक हो और आज के दौर में कहा जाना चाहिए कि दुनिया भर की महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति एकजुट होने की जरूरत है। कमोबेश दुनिया के सभी देशों में महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण नीति आज भी कायम है। क्या कभी यह कहा जाएगा कि बलात्कारी घृणा का पात्र है न कि बलात्कार पीडिता। हत्या करने वाला दोषी होगा या जिसकी हत्या की गई है वह दोषी माना जाएगा। अतएव

बलात्कार पीडिता को समाज के समक्ष शर्म करने की जरूरत नहीं है। आज आश्यकता है कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन करने की।

उक्त उद्बोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.मनोज कुमार ने किए। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र, मातृ सेवा संघ समाज कार्य संस्थान, नागपुर, म्युअर मेमोरियल हॉस्पीटल, नागपुर तथा फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के संयुक्त तत्वावधान में 'महिला अधिकार संरक्षण : भारत और जर्मनी के मॉडल' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान बोल रहे थे।

अकादमिक सत्र में मातृ सेवा संघ समाज कार्य संस्थान, नागपुर के प्राचार्य डॉ. जॉन मीनाचेरी ने 'महिलाओं की सुरक्षा के लिए भारत के विशेष प्रयास' फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के डॉ. एलेक्जेंड्रा कॅसपरी ने 'महिलाओं की सुरक्षा के लिए जर्मनी के विशेष प्रयास', डॉ.ज्योति निसवाडे ने 'भारत में घरेलू हिंसा को कम करने के लिए सामाजिक कार्य हस्तक्षेप', फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के मरिएन्ना गांजे और एमीने जेटुओनी ने 'जर्मनी में घरेलू हिंसा को कम करने के लिए सामाजिक कार्य हस्तक्षेप', विलास शेंडे ने 'भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकारों का संरक्षण', फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के जेसिका सेपिल और यहारिया गुटएरेज ने

'जर्मनी में महिलाओं के स्वास्थ्य अधिकारों का संरक्षण', डॉ.विजय प्रताप तिवारी ने 'महिलाओं के अधिकारों की

सुरक्षा में भारत के सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका', रा.तु.म. नागपुर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के डॉ.विकास जांभूलकर ने 'भारत में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व: एक मानव अधिकार परिप्रेक्ष्य' और

फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, जर्मनी के अनाटेसिया ग्लूथ व ऐमिली वेगेनर ने 'जर्मनी में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व' विषय पर विचार व्यक्त किए। समापन समारोह में एडवोकेट ढगे ने महिला अधिकार से संबंधित विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर किया गया। म्युअर मेमोरियल हॉस्पीटल, नागपुर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में लंदन से आए प्रतिनिधियों सहित 150 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए जिसमें अध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी शामिल हुए।